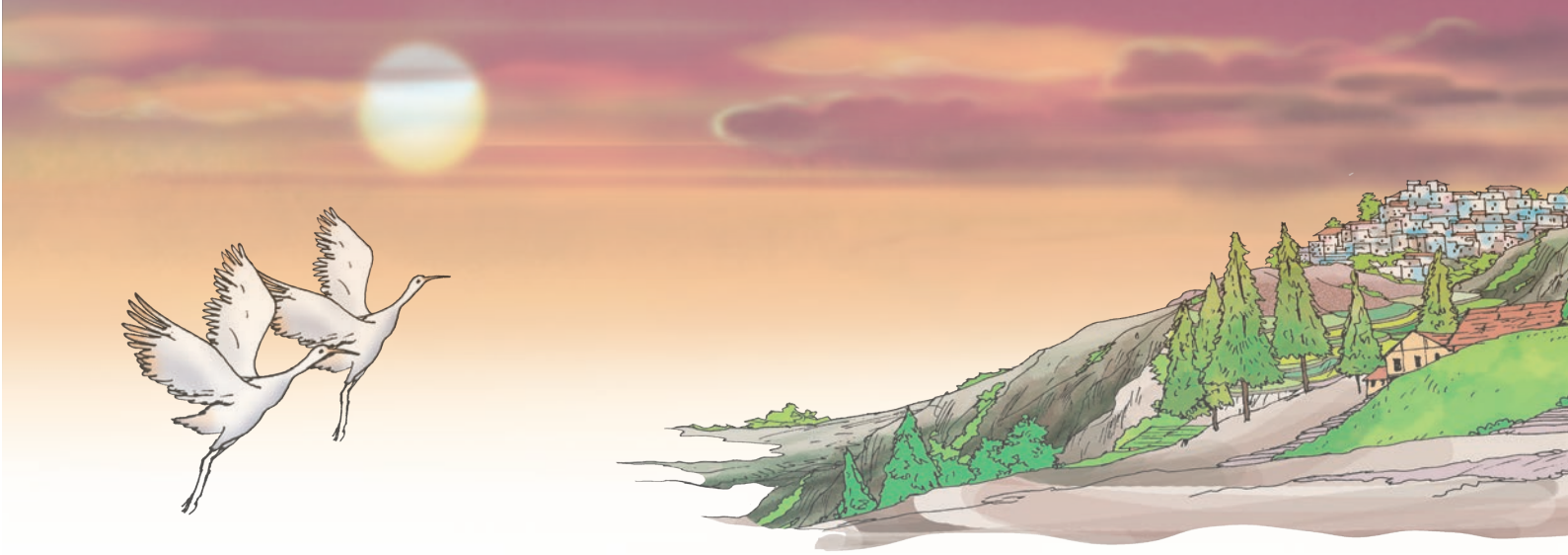

हमारा अद्भुत संसार

कक्षा 4 के लिए पाठ्यपुस्तक

(हमारे आस-पास की दुनिया)

0436

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

© NCERT not to be republished

0436 – हमारा अद्भुत संसार, कक्षा 4
(हमारे आस-पास की दुनिया)

ISBN 978-93-5729-701-1

प्रथम संस्करण
जुलाई 2025 श्रावण 1947

PD 100T BS

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2025

₹ 65.00

एन.सी.ई.आर.टी. वॉटरमार्क 80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित।

सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशन प्रभाग में प्रकाशित तथा श्री बालाजी प्रिंटर्स, जे.पी. कॉम्प्लैक्स, जवाहर नगर, लोनी रोड, दिल्ली 110 094 द्वारा मुद्रित।

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भी भाग को छापना तथा इलैक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटो प्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुन: प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रचारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशन की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

रा.शै.अ.प्र.प. के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस
श्री अरविंद मार्ग
नई दिल्ली 110 016 फोन : 011-26562708

108, 100 फीट रोड
हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे
बनाशंकरी III इस्टेज
बेंगलुरू 560 085 फोन : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन
डाकघर नवजीवन
अहमदाबाद 380 014 फोन : 079-27541446

सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस
निकट : धनकल बस स्टॉप पनिहटी
कोलकाता 700 114 फोन : 033-25530454

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लेक्स
मालीगाँव
गुवाहाटी 781 021 फोन : 0361-2676869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग : *एम.वी. श्रीनिवासन*
मुख्य संपादक : *बिज्ञान सुतार*
मुख्य उत्पादन अधिकारी (प्रभारी) : *जहान लाल*
मुख्य व्यापार प्रबंधक : *अमिताभ कुमार*
सहायक उत्पादन अधिकारी : *सायुराज ए.आर.*

आवरण एवं चित्रांकन
जोएल गिल एवं ग्रीन ट्री डिजाइनिंग

© NCERT not to be republished

आमुख

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में परिकल्पित विद्यालयी शिक्षा का बुनियादी स्तर बच्चों के समग्र विकास के लिए आधारशिला का कार्य करता है। यह उन्हें न केवल हमारे देश के लोकाचार और संवैधानिक ढाँचे में निहित अमूल्य संस्कारों को आत्मसात करने में सक्षम बनाता है, अपितु बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मक कौशलों को प्राप्त करने में भी सक्षम बनाता है।

प्रारंभिक स्तर, बुनियादी और मध्य स्तर के बीच एक सेतु का कार्य करता है, जो कक्षा 3 से कक्षा 5 तक के तीन वर्षों तक चलता है। इस स्तर के दौरान प्रदान की जाने वाली शिक्षा बुनियादी स्तर के शैक्षणिक दृष्टिकोण का निर्माण करती है। इस स्तर में बच्चों को पाठ्यपुस्तकों और औपचारिक कक्षा-कक्ष से भी परिचित कराया जाता है, जबकि खेल-कूद और खोज के साथ-साथ गतिविधि आधारित शिक्षण पद्धतियाँ जारी रहती हैं। इस परिचय का उद्देश्य पाठ्यचर्या के क्षेत्रों में एक आधार स्थापित करना ही नहीं, बल्कि पढ़ने, लिखने, बोलने, चित्र बनाने, गायन और खेल के माध्यम से समग्र शिक्षा एवं आत्मान्वेषण को बढ़ावा देना है। इस व्यापक दृष्टिकोण में शारीरिक शिक्षा, कला शिक्षा, पर्यावरण शिक्षा, भाषाएँ, गणित, आधारभूत विज्ञान और सामाजिक विज्ञान सम्मिलित हैं। यह व्यापक दृष्टिकोण सुनिश्चित करता है कि बच्चे संज्ञानात्मक-संवेदनात्मक और शारीरिक-प्राणिक (भावनात्मक) दोनों स्तरों पर अच्छी तरह से तैयार हों, ताकि वे सहजता से मध्य स्तर तक पहुँच सकें।

विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 की अनुशंसाओं का पालन करते हुए *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* के अनुवर्ती के रूप में, प्रारंभिक स्तर में 'हमारे आस-पास की दुनिया' को एक नया विषय क्षेत्र बनाया गया है। इसका उद्देश्य अनुभवात्मक शिक्षण दृष्टिकोण के माध्यम से पर्यावरण शिक्षा प्रदान करना तथा बच्चों के अनुभवों को विभिन्न विषय क्षेत्रों की बुनियादी अवधारणाओं से जोड़ना है, जिसका वे मध्य स्तर में अध्ययन करेंगे।

'हमारे आस-पास की दुनिया' के लिए यह पाठ्यपुस्तक *हमारा अद्भुत संसार* बच्चों को उनकी अपनी दुनिया से संबंधित दिन-प्रतिदिन की सीखों को विज्ञान, सामाजिक विज्ञान और पर्यावरण शिक्षा जैसे विभिन्न विषय क्षेत्रों की बुनियादी अवधारणाओं से जोड़ने में सहायता करने के लिए तैयार की गई है। इसका उद्देश्य पर्यावरण के प्रति उनकी संवेदनशीलता को बढ़ाना, उनमें समुदाय के साथ काम करने के कौशल विकसित करना और विभिन्न व्यवसायों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण को बढ़ावा देना है।

यह पाठ्यपुस्तक *हमारा अद्भुत संसार*, बच्चों में इस विकासात्मक स्तर के लिए आवश्यक वैचारिक समझ, आलोचनात्मक चिंतन, रचनात्मकता, मूल्यों एवं स्वभाव पर बल देती है। इसमें समावेशिता, बहुभाषिकता, जेंडर समानता और सांस्कृतिक मूल से जुड़ाव जैसे बहुपक्षीय विषयों

© NCERT not to be republished

को सम्मिलित किया गया है तथा उपयुक्त आई.सी.टी. उपकरणों एवं स्कूल आधारित आकलन को समेकित किया गया है।

कक्षा 3 में विद्यार्थियों को चार व्यापक इकाइयों— 'हमारे परिवार और समुदाय', 'जीवन आस-पास', 'प्रकृति के उपहार' और 'आस-पास है क्या-क्या?' से परिचित कराया गया। कक्षा 4 हेतु यह पाठ्यपुस्तक पाँच इकाइयों पर केंद्रित है, जिसमें 'हमारा समुदाय', 'हमारे परिवेश में जीवन', 'स्वास्थ्य एवं आरोग्य', 'हमारे आस-पास की वस्तुएँ' और 'हमारा पर्यावरण' सम्मिलित है। विषयवस्तु एवं प्रक्रियाओं को सभी स्थानों पर बच्चों की आयु, अनुभव, रुचियों एवं विविधता को ध्यान में रखकर तैयार किया गया है।

इस स्तर में बच्चों की अंतर्निहित जिज्ञासा को उनके प्रश्नों का उत्तर देकर तथा मूल शिक्षण सिद्धांतों पर आधारित गतिविधियों को प्रारूपित करके पोषित करने की आवश्यकता है। खेल-खेल में सीखने की पद्धति के इस स्तर में भी जारी रहने के चलते, शिक्षण के लिए उपयोग किए जाने वाले खिलौनों और खेलों की प्रकृति मात्र ध्यान खींचने के बजाय बच्चों की संलग्नता बढ़ाने की दिशा में विकसित की गई है।

यद्यपि यह पाठ्यपुस्तक मूल्यवान है, फिर भी बच्चों को इस विषय पर अतिरिक्त संसाधनों की तलाश करने की आवश्यकता है। विद्यालय के पुस्तकालयों को इस विस्तारित शिक्षा को सुगम बनाना चाहिए तथा शिक्षकों एवं अभिभावकों को उनके इन प्रयासों का समर्थन करना चाहिए।

एक प्रभावी शिक्षण वातावरण बच्चों को प्रेरित करता है, उन्हें व्यस्त रखता है तथा उनमें जिज्ञासा व आश्चर्य को बढ़ावा देता है जो सीखने के लिए महत्वपूर्ण है।

मैं, पूरे विश्वास के साथ प्रारंभिक स्तर के सभी बच्चों और शिक्षकों के लिए इस पाठ्यपुस्तक की अनुशंसा करता हूँ। मैं इसके विकास में सम्मिलित सभी लोगों के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ तथा आशा करता हूँ कि यह सभी की अपेक्षाओं पर खरी उतरेगी।

रा.शै.अ.प्र.प. पाठ्यपुस्तक के नियमित परिवर्द्धन और प्रकाशन की गुणवत्ता में सुधार के लिए प्रतिबद्ध है, इसलिए हम पाठ्यपुस्तक की विषय-सामग्री को परिष्कृत करने के लिए आपके सुझावों एवं प्रतिक्रियाओं का स्वागत करते हैं।

दिनेश प्रसाद सकलानी
निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

नई दिल्ली
25 मई 2025

© NCERT not to be republished

पाठ्यपुस्तक के बारे में

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एक परिवर्तनकारी शिक्षा प्रणाली की परिकल्पना करती है, जो भारतीय मूल्यों एवं संस्कृति में गहराई से निहित है। अनुसंधानपरक, अनुभवात्मक तथा रोचक शिक्षण अनुभवों के माध्यम से हम इस दृष्टिकोण को वास्तविकता में बदल सकते हैं। *विद्यालयी शिक्षा हेतु राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023* (*एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023*) ने कक्षा 3 से 5 तक की प्राथमिक अवस्था के लिए 'हमारे आस-पास की दुनिया' को एक मुख्य पाठ्य क्षेत्र के रूप में प्रस्तुत किया है।

हमारे आस-पास की दुनिया बच्चों को अपने परिवेश का अन्वेषण करने और उससे जुड़ने में सहायता करती है, जिससे उनमें अपनत्व और उत्तरदायित्व की भावना का विकास होता है। भौतिक, सामाजिक एवं प्राकृतिक वातावरण का अन्वेषण करते हुए बच्चे जागरूकता, संवेदनशीलता और अपने आस-पास की दुनिया की गहरी समझ विकसित करते हैं। जिज्ञासा को प्रोत्साहित करने, गतिविधि आधारित अन्वेषण और लोगों व वस्तुओं से जुड़ाव के माध्यम से बच्चे दुनिया को अधिक समग्र रूप में समझ पाते हैं। अतः यह पाठ्य क्षेत्र समेकित एवं बहु-विषयक रूप से तैयार किया गया है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की दिशा को ध्यान में रखते हुए कक्षा 4 की पाठ्यपुस्तक *हमारा अद्भुत संसार* को विशिष्ट रूप से इस प्रकार बनाया गया है कि यह बच्चों में जिज्ञासा जगाए और उन्हें अनुभवों के द्वारा सीखने के लिए प्रेरित करे। इसमें क्रियात्मक गतिविधियाँ, प्रश्नोत्तरी एवं अनुसंधानपरक क्रियाकलाप सम्मिलित हैं, जिनसे बच्चे खुद सोचते, देखते, महसूस करते और सीखते हैं।

पुस्तक में विज्ञान, सामाजिक विज्ञान और पर्यावरण अध्ययन को जोड़ते हुए, इसे इस प्रकार से बनाया गया है कि बच्चे अपने जीवन से जुड़ी वस्तुओं को पहचानें, समस्याओं को समझें और नए उपायों को सोचें। इसका मुख्य उद्देश्य यह है कि बच्चे आवश्यक जीवन-कौशल, ज्ञान, अच्छे व्यवहार एवं सकारात्मक सोच विकसित कर सकें। जब बच्चे अपने परिवेश से खुशी और जिज्ञासा के साथ जुड़ते हैं, तो वे न केवल बेहतर तरीके से सीखते हैं, बल्कि उनमें आजीवन अपने आस-पास की दुनिया को समझने और उसके प्रति सम्मान की भावना विकसित होती है।

कक्षा 3 की पाठ्यपुस्तक में दी गई मूल बातों को आगे बढ़ाते हुए यह पुस्तक पाँच रोचक इकाइयों में विभाजित है— 1. हमारा समुदाय 2. हमारे परिवेश में जीवन 3. स्वास्थ्य एवं आरोग्य 4. हमारे आस-पास की वस्तुएँ 5. हमारा पर्यावरण।

प्रत्येक इकाई को इस प्रकार निर्मित किया गया है कि वह बच्चों की रुचि बनाए रखे और उन्हें सक्रिय रूप से सीखने में सहायता करे। सभी अध्यायों में संवाद या कहानी, देखने और सोचने की गतिविधियाँ, छोटे-छोटे प्रयोग, भ्रमण और अनुसंधान आधारित रोचक बातें सम्मिलित हैं, उदाहरण के लिए इकाई 4— 'हमारे आस-पास की वस्तुएँ' में अध्यायों का आरंभ संवादात्मक बातचीत से होता

© NCERT not to be republished

है। ये संवाद बच्चों में जिज्ञासा जगाते हैं और उन्हें आस-पास की घटनाओं एवं वस्तुओं को गहराई से समझने के लिए प्रेरित करते हैं। जब बच्चे किसी वस्तु का अवलोकन करते हैं और उसके बारे में सोचते हैं, तो वे परिस्थितियों में हो रहे बदलाव को पहचानते हैं और वैज्ञानिक सोच विकसित करते हैं। इसी प्रकार इकाई 2 में 'प्रकृति की पाठशाला' नामक अध्याय बच्चों को यह सिखाने में सहायता करता है कि एक शांतिपूर्ण और संतुलित जीवन के लिए प्रकृति के संसाधनों का संतुलन, सहायता एवं संरक्षण क्यों आवश्यक है।

पाठ्यपुस्तक का प्रत्येक अध्याय बच्चों की आवश्यकताओं एवं समझ के अनुसार तैयार किया गया है। यह बच्चों को सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए प्रेरित करता है। रोचक पहेलियाँ, मजेदार प्रश्न-उत्तर और खेल के रूप में दी गई गतिविधियाँ बच्चों में सीखने की उत्सुकता बढ़ाती हैं और शिक्षण को आनंददायक बना देती हैं। पुस्तक में दिए चित्रांकन बच्चों को अवलोकन, अर्थग्रहण और स्वयं सोचने के लिए प्रेरित करते हैं। प्रत्येक अध्याय की भाषा सरल, सटीक और बच्चों की उम्र के अनुरूप है, जिससे वे सहजता से विषय को समझ सकें। साथ ही, यह हमारे देश की विविधता और समावेशिता को भी दर्शाती है। पुस्तक में भारतीय ज्ञान परंपरा को भी स्थान दिया गया है। विभिन्न अध्यायों में बच्चों को भारत की समृद्ध संस्कृति, विरासत एवं पारंपरिक ज्ञान से जोड़ने के लिए रोचक उदाहरण, चित्रांकन, चर्चा और लघु सर्वेक्षण सम्मिलित किए गए हैं। बच्चों को सोच-समझकर निर्णय लेने के लिए प्रेरित किया गया है, जैसे– पर्यावरण की देखभाल, दूसरों की भावनाओं का सम्मान और उत्तरदायी नागरिक बनने की समझ। यह दृष्टिकोण 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना को पुष्ट करता है, जिसका अर्थ है "संपूर्ण विश्व एक परिवार है"।

प्रत्येक इकाई का आरंभ एक संकल्पना रूपरेखा से होता है, जिसमें यह बताया गया है कि उस अध्याय से बच्चों के क्या-क्या सीखने की आशा की जाती है और इससे उनमें कौन-कौन सी प्रमुख दक्षताओं का विकास होगा। विषयवस्तु को बच्चों के अनुकूल, संवादपरक एवं आकर्षक तरीके से प्रस्तुत किया गया है, जैसे– खेलों के माध्यम से, कहानियों द्वारा, खिलौनों और गतिविधियों पर आधारित शिक्षण से, जिससे सीखना आनंदप्रद और अर्थपूर्ण हो। शिक्षकों के लिए विशेष 'शिक्षण संकेत' भी दिए गए हैं, जो अध्यापन में सहायता और स्पष्टता प्रदान करते हैं। प्रत्येक अध्याय में 'क्या आप जानते हैं?' नामक एक रोचक भाग भी जोड़ा गया है, जिससे बच्चे और अधिक सोचें, प्रश्न करें और विषयों को गहराई से समझने का प्रयास करें।

भारत की भाषायी विविधता को ध्यान में रखते हुए पुस्तक में स्थानीय संदर्भों और गतिविधियों को भी जोड़ा गया है, जिससे बच्चे विभिन्न भारतीय भाषाओं में एक ही शब्द के पर्यायवाची या समानार्थी शब्दों को जान सकें और भाषा का आनंद ले सकें। समेकित दृष्टिकोण पूरी पुस्तक में स्पष्ट है, उदाहरण के लिए अध्याय 9— 'जैसा देश, वैसा भेष' हमारे देश के विविध भौगोलिक क्षेत्रों,

© NCERT not to be republished

जैसे – मैदान, रेगिस्तान, समुद्र तटीय क्षेत्र और पर्वतीय क्षेत्रों पर केंद्रित है। यह अध्याय इन क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के खान-पान, पहनावे, आवास, कला एवं संस्कृति जैसे सामाजिक पहलुओं के प्रभाव को दर्शाता है। देश के चार राज्यों की यात्रा का उदाहरण प्रस्तुत करते हुए यह अध्याय विविधता की सुंदर झलक दिखाता है और हमारे चारों ओर उपस्थित सांस्कृतिक विविधता को पहचानने और उसके प्रति सम्मान की भावना को सुदृढ़ करता है। साथ ही, यह हमें चुनौतियों का सामना करने और जीवन में सहनशीलता एवं धैर्य बनाए रखना भी सिखाता है।

विज्ञान की जटिल शब्दावली के बिना, बच्चों को वैज्ञानिक प्रक्रिया का अनुभव कराने के लिए आस-पास की वस्तुओं के अनुसंधान एवं अन्वेषण की योजना बनाई गई है। प्रत्येक अध्याय परंपरा और आधुनिकता का संतुलित मेल प्रस्तुत करता है। यह पुस्तक जहाँ बच्चों को भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को समझने का अवसर देती है, वहीं यह दैनिक जीवन में प्रौद्योगिकी के महत्व को भी रेखांकित करती है।

यह पुस्तक आकलन के समेकित दृष्टिकोण को अपनाती है। आकलन रणनीतियों को शिक्षण प्रक्रियाओं में इस तरह से समाहित किया गया है कि वे बच्चों के लिए सहज व स्वाभाविक हों। बच्चों के सीखने का आकलन केवल एक ही प्रकार से करने की जगह उन्हें विभिन्न रूपों में स्वयं को अभिव्यक्त करने का अवसर दिया जाता है, जैसे – कलात्मक गतिविधियाँ, समूह चर्चाएँ, लेखन कार्य, मुक्त प्रश्नों पर आधारित सोच-विचार, परियोजना कार्य, छोटे-छोटे प्रयोग और अनुसंधान आधारित क्रियाकलाप आदि।

'आइए विचार करें' अनुभाग बच्चों को अध्याय से संबंधित विषयों पर चिंतन करने, उन्हें सारगर्भित रूप में व्यक्त करने और अपने विचारों को साझा करने का अवसर देता है। शिक्षकों की सुविधा के लिए इस पुस्तक में दी गईं गतिविधियाँ सुझावात्मक रूप में दी गई हैं ताकि शिक्षक आवश्यकतानुसार इसी प्रकार की अन्य गतिविधियाँ तैयार कर सकें।

हमारा अद्भुत संसार के माध्यम से हमारा प्रयास है कि बच्चों को एक ऐसा शिक्षण अनुभव मिले जो रोचक, सक्रिय, ज्ञानवर्धक एवं भावनात्मक रूप से जुड़ाव वाला हो। हम चाहते हैं कि यह पुस्तक बच्चों में जिज्ञासा, रचनात्मकता और सोचने-समझने की क्षमता को बढ़ाए तथा उन्हें अपने आस-पास की दुनिया को जानने और समझने के लिए प्रेरित करे।

धन्या कृष्णन
सदस्य-समन्वयक एवं *सह-आचार्य*
प्रारंभिक शिक्षा विभाग
रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

© NCERT not to be republished

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक [1][**संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य**] बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**

विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म और उपासना की **स्वतंत्रता,**

प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,

तथा उन **सब में**

व्यक्ति की गरिमा और [2][**राष्ट्र की एकता और अखंडता**] सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**

बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. (मिति मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी, संवत् दो हजार छह विक्रमी) को **एतद्द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।**

---

1. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) ''प्रभुत्व-संपन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य'' के स्थान पर प्रतिस्थापित।
2. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) ''राष्ट्र की एकता'' के स्थान पर प्रतिस्थापित।

© NCERT not to be republished

राष्ट्रीय पाठ्यक्रम एवं शिक्षण-अधिगम सामग्री समिति (एन.एस.टी.सी.)

महेश चंद्र पंत, *कुलाधिपति*, राष्ट्रीय शैक्षिक योजना एवं प्रशासन संस्थान **(*अध्यक्ष*)**

मञ्जुल भार्गव, *आचार्य*, प्रिंसटन विश्वविद्यालय **(*सह-अध्यक्ष*)**

सुधा मूर्ति, *प्रतिष्ठित लेखिका* एवं *शिक्षाविद*

बिबेक देबरॉय, *अध्यक्ष,* प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद् (ई.ए.सी.-पी.एम.)

शेखर मांडे, *पूर्व महानिदेशक*, सी.एस.आई.आर. एवं *आचार्य*, सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय, पुणे

सुजाता रामदोरई, *आचार्य*, ब्रिटिश कोलंबिया विश्वविद्यालय, कनाडा

शंकर महादेवन, *संगीत विशेषज्ञ*, मुंबई

यू. विमल कुमार, *निदेशक*, प्रकाश पादुकोण बैडमिंटन अकादमी, बेंगलुरु

मिशेल डैनिनो, *अतिथि आचार्य*, आई.आई.टी. गांधीनगर

सुरीना राजन, *आई.ए.एस.* (सेवानिवृत्त), हरियाणा एवं *पूर्व महानिदेशक*, एच.आई.पी.ए.

चमू कृष्ण शास्त्री, *अध्यक्ष*, भारतीय भाषा समिति, शिक्षा मंत्रालय

संजीव सान्याल, *सदस्य*, प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद् (ई.ए.सी.-पी.एम.)

एम.डी. श्रीनिवास, *अध्यक्ष*, सेंटर फॉर पॉलिसी स्टडीज़, चेन्नई

गजानन लोंढे, *प्रमुख*, कार्यक्रम कार्यालय, एन.एस.टी.सी.

रेबिन छेत्री, *निदेशक*, राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, सिक्किम

प्रत्यूष कुमार मंडल, *आचार्य* एवं *अध्यक्ष*, सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

दिनेश कुमार, *आचार्य*, गणित एवं विज्ञान शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

कीर्ति कपूर, *आचार्य*, भाषा शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

रंजना अरोड़ा, *आचार्य* एवं *अध्यक्ष*, पाठ्यचर्या अध्ययन एवं विकास विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली **(*सदस्य-सचिव*)**

© NCERT not to be republished

भारत का संविधान

भाग-3 (अनुच्छेद 12-35)
(अनिवार्य शर्तों, कुछ अपवादों और युक्तियुक्त निर्बंधन के अधीन)
द्वारा प्रदत्त

मूल अधिकार

समता का अधिकार

- विधि के समक्ष एवं विधियों के समान संरक्षण;
- धर्म, मूलवंश, जाति, लिंग या जन्मस्थान के आधार पर;
- लोक नियोजन के विषय में;
- अस्पृश्यता और उपाधियों का अंत।

स्वातंत्र्य-अधिकार

- अभिव्यक्ति, सम्मेलन, संघ, संचरण, निवास और वृत्ति का स्वातंत्र्य;
- अपराधों के लिए दोष सिद्धि के संबंध में संरक्षण;
- प्राण और दैहिक स्वतंत्रता का संरक्षण;
- छः से चौदह वर्ष की आयु के बच्चों को निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा;
- कुछ दशाओं में गिरफ्तारी और निरोध से संरक्षण।

शोषण के विरुद्ध अधिकार

- मानव के दुर्व्यापार और बलात् श्रम का प्रतिषेध;
- परिसंकटमय कार्यों में बालकों के नियोजन का प्रतिषेध।

धर्म की स्वतंत्रता का अधिकार

- अंतःकरण की और धर्म के अबाध रूप से मानने, आचरण और प्रचार की स्वतंत्रता;
- धार्मिक कार्यों के प्रबंध की स्वतंत्रता;
- किसी विशिष्ट धर्म की अभिवृद्धि के लिए करों के संदाय के संबंध में स्वतंत्रता;
- राज्य निधि से पूर्णतः पोषित शिक्षा संस्थाओं में धार्मिक शिक्षा या धार्मिक उपासना में उपस्थित होने के संबंध में स्वतंत्रता।

संस्कृति और शिक्षा संबंधी अधिकार

- अल्पसंख्यक-वर्गों को अपनी भाषा, लिपि या संस्कृति विषयक हितों का संरक्षण;
- अल्पसंख्यक-वर्गों द्वारा अपनी शिक्षा संस्थाओं का स्थापन और प्रशासन।

सांविधानिक उपचारों का अधिकार

- उच्चतम न्यायालय एवं उच्च न्यायालय के निर्देश या आदेश या रिट द्वारा प्रदत्त अधिकारों को प्रवर्तित कराने का उपचार।

© NCERT not to be republished

पाठ्यपुस्तक निर्माण समूह

रेबिन छेत्री, *निदेशक*, राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, सिक्किम (***टीम लीडर***)

अर्चना पणिक्कर, *कार्यक्रम निदेशक*, पर्यावरण शिक्षा केंद्र (सी.ई.ई.), अहमदाबाद

अरुण नायक, *आचार्य*, अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय, बेंगलुरु

के.वी. श्रीदेवी, *सह-आचार्य*, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, अजमेर

गायत्री दवे, *कार्यक्रम समन्वयक*, पर्यावरण शिक्षा केंद्र (सी.ई.ई.), अहमदाबाद

जुबली पद्मनाभन, *सह-आचार्य*, गणित एवं विज्ञान शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

डिकिला लेप्चा, *सहायक आचार्य*, राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, सिक्किम

तरुण चौबीसा, *वरिष्ठ परामर्शदाता*, कार्यक्रम कार्यालय, एन.एस.टी.सी.

बिनय पटनायक, *मुख्य परामर्शदाता* एवं *कार्यक्रम अधिकारी*, एन.एस.टी.सी.

श्यामला कामथ, *परियोजना समन्वयक,* संवित अनुसंधान फाउंडेशन, बेंगलुरु

धन्या कृष्णन, *सह-आचार्य*, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली (***सदस्य-समन्वयक***)

समीक्षक

मञ्जुल भार्गव, *सह-अध्यक्ष*, एन.एस.टी.सी. तथा *सदस्य*, समन्वयन समिति, पाठ्यचर्या क्षेत्र समूह — प्रारंभिक स्तर

अनुराग बेहर, *सदस्य*, राष्ट्रीय पर्यवेक्षण समिति

रंजना अरोड़ा, *आचार्य* एवं *अध्यक्ष*, पाठ्यक्रम अध्ययन एवं विकास विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

सुनीति सनवाल, *आचार्य* एवं *अध्यक्ष*, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली और *सदस्य-संयोजक*, समन्वयन समिति, पाठ्यचर्या क्षेत्र समूह — प्रारंभिक स्तर

गजानन लोंढे, *प्रमुख*, कार्यक्रम कार्यालय, एन.एस.टी.सी.

सुखविंदर, *सह-आचार्य*, पाठ्यचर्या अध्ययन एवं विकास विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

अभय कुमार, *सह-आचार्य*, केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

अमित रंजन, *सहायक आचार्य*, केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

© NCERT not to be republished

हिंदी संस्करण

अनुवादक

ज्योति ठाकुर, *वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी*, रक्षा मंत्रालय, नई दिल्ली

जय प्रकाश नारायण, *प्रूफ रीडर* (संविदा), रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

पुनरीक्षक

आर.एस. दास, *उप-प्रधानाचार्य* (सेवानिवृत्त), बलवंत राय मेहता सीनियर सेकेंडरी स्कूल, लाजपत नगर, नई दिल्ली

कुमकुम चतुर्वेदी, *कंटेंट डेवलपर* और *अनुवादक*, इग्नू, नई दिल्ली

महावीर वत्स, *आचार्य* (सेवानिवृत्त), डॉ. भीमराव अंबेडकर कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

राहुल राज आर्यन, *सहायक आचार्य*, लक्ष्मीबाई कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

वंदिता, *वरिष्ठ हिंदी अधिकारी*, सी.एस.आई.आर., नई दिल्ली

साकेत बहुगुणा, *सहायक आचार्य*, केंद्रीय हिंदी संस्थान, नई दिल्ली

स्वस्ति शर्मा, *वरिष्ठ परामर्शदाता*, कार्यक्रम कार्यालय, एन.एस.टी.सी.

समन्वयक

धन्या कृष्णन, *सह-आचार्य*, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

© NCERT not to be republished

आभार

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा पर्यवेक्षण समिति के अध्यक्ष, सह-अध्यक्ष एवं सभी माननीय सदस्यों के मार्गदर्शन एवं समर्थन के लिए अपना हार्दिक आभार प्रकट करती है। इन सभी का अमूल्य योगदान विद्यालयी शिक्षा हेतु राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एन.सी.एफ.-एस.ई.) 2023 के दृष्टिकोणों को इस पाठ्यपुस्तक में सम्मिलित करने में अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है।

परिषद्, राष्ट्रीय पाठ्यक्रम एवं शिक्षण-अधिगम सामग्री समिति के अध्यक्ष, सह-अध्यक्ष एवं सदस्यों के प्रति भी आभार प्रकट करती है, जिनके निरंतर मार्गदर्शन एवं समर्पित सहयोग से इस पाठ्यपुस्तक की गहन समीक्षा एवं गुणवत्ता सुनिश्चित हो सकी। इसके अतिरिक्त परिषद्, एन.एस.टी.सी. प्रारंभिक स्तर एवं 'हमारे आस-पास की दुनिया' उप-समूह के अध्यक्ष एवं सदस्यों सहित अन्य संबंधित पाठ्यचर्या क्षेत्र समूहों (सी.ए.जी.) को भी धन्यवाद देती है, जिन्होंने समेकित विषयों पर मार्गदर्शन एवं सहयोग प्रदान किया।

परिषद्, अमरेंद्र प्रसाद बेहरा, *प्रोफेसर* एवं *अध्यक्ष*, पी.आर.डी.; प्रत्यूष कुमार मंडल, *प्रोफेसर* एवं *अध्यक्ष*, सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग; सुनीता फरक्या, *आचार्य* एवं *अध्यक्ष*, विज्ञान एवं गणित शिक्षा विभाग; इंद्राणी भादुड़ी, *आचार्य* एवं *अध्यक्ष*, शैक्षिक सर्वेक्षण प्रभाग; विनय सिंह, *आचार्य* एवं *अध्यक्ष*, विशेष आवश्यकता समूह शिक्षा; मिली रॉय, *आचार्य* एवं *अध्यक्ष*, जेंडर अध्ययन विभाग; और ज्योत्सना तिवारी, *आचार्य* एवं *अध्यक्ष*, कला एवं सौंदर्यबोध शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली तथा उनके सहयोगियों के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करती है, जिन्होंने इस पाठ्यपुस्तक में सह-पाठ्यचर्यात्मक आयामों के समावेशन तथा अन्य विषयों के साथ समन्वय स्थापित करने में उल्लेखनीय सहयोग प्रदान किया।

परिषद्, संदीप कुमार, *सहायक आचार्य*, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली के योगदान की भी सराहना करती है, जिन्होंने विषय-विकास तथा पाठ्यपुस्तक को अंतिम रूप देने में सक्रिय भूमिका निभाई। विषय-विकास में महत्वपूर्ण योगदान के लिए परिषद्, बीर अभिमन्यु कुमार, *सहायक आचार्य*, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प.; श्रुति करमालकर, *बाल साहित्यकार*; तथा कीर्ति कौल, *प्रमुख, शोध* एवं *संसाधन*, शिव नादर स्कूल, नोएडा के प्रति विशेष धन्यवाद ज्ञापित करती है। परिषद्, भावना उपाध्याय, अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन, बेंगलुरु को भी धन्यवाद देती है, जिन्होंने विषय समन्वयन में सहयोग प्रदान किया।

© NCERT not to be republished

पाठ्यपुस्तक निर्माण में शिक्षण क्षेत्र से जुड़े शिक्षकों प्रशांत दिवेकर, ज्ञान प्रबोधिनी, पुणे; बारेन कुमार राउल, मिरांबिका फ्री प्रोग्रेस स्कूल, नई दिल्ली; गीतिका मल्होत्रा अरोड़ा, द हेरिटेज स्कूल, रोहिणी, नई दिल्ली; तथा गुरप्रीत कौर एवं स्नेहा यादव, हेरिटेज एक्सपीरियंशिअल लर्निंग स्कूल गुरुग्राम का सहयोग विशेष रूप से उपयोगी सिद्ध हुआ।

परिषद्, चेतना कौशिक, *वरिष्ठ अनुसंधान सहयोगी* तथा तृष्णा नाथ, *कनिष्ठ परियोजना अध्येता*, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली के योगदान को सराहती है, जिन्होंने पुस्तक विकास की प्रक्रिया में निरंतर शैक्षणिक एवं व्यवस्थागत सहायता प्रदान की।

परिषद्, इस पुस्तक के संपादन एवं प्रकाशन हेतु दिए गए सहयोग के लिए प्रकाशन प्रभाग को विशेष धन्यवाद देती है। पुस्तक के संपादन एवं अंतिम रूप देने के लिए परिषद्, अतुल मिश्रा, *संपादक* (संविदा); अंजू शर्मा एवं अतुल कुमार गुप्ता, *संपादन सहायक;* पवन कुमार बरियार, *प्रभारी*, डी.टी.पी. प्रकोष्ठ; बिट्टू कुमार महतो और विपन कुमार शर्मा, *डी.टी.पी. ऑपरेटर* (संविदा), प्रकाशन प्रभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करती है।

© NCERT not to be republished

विषय-सूची

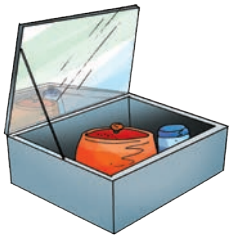

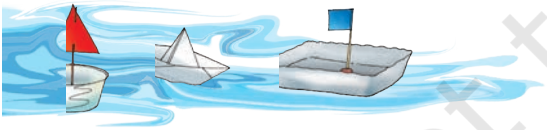

आमुख *iii*

पाठ्यपुस्तक के बारे में *v*

इकाई 1 : हमारा समुदाय

अध्याय 1 : मिलकर साथ रहना 3

अध्याय 2 : अपने परिवेश को जानना 17

इकाई 2 : हमारे परिवेश में जीवन

अध्याय 3 : प्रकृति की पाठशाला 35

अध्याय 4 : प्रकृति की गोद में 57

इकाई 3 : स्वास्थ्य एवं आरोग्य

अध्याय 5 : स्वास्थ्य के लिए भोजन 71

अध्याय 6 : स्वस्थ रहो, प्रसन्न रहो 85

इकाई 4 : हमारे आस-पास की वस्तुएँ

अध्याय 7 : वस्तुएँ कैसे कार्य करती हैं? 104

अध्याय 8 : वस्तुओं का निर्माण 117

इकाई 5 : हमारा पर्यावरण

अध्याय 9 : जैसा देश, वैसा भेष 130

अध्याय 10 : हमारा आकाश 152

© NCERT not to be republished

गांधी जी का जंतर

तुम्हें एक जंतर देता हूँ। जब भी तुम्हें संदेह हो या तुम्हारा अहम् तुम पर हावी होने लगे, तो यह कसौटी आज़माओ :

जो सबसे गरीब और कमज़ोर आदमी तुमने देखा हो, उसकी शक्ल याद करो और अपने दिल से पूछो कि जो कदम उठाने का तुम विचार कर रहे हो, वह उस आदमी के लिए कितना उपयोगी होगा। क्या उससे उसे कुछ लाभ पहुँचेगा? क्या उससे वह अपने ही जीवन और भाग्य पर कुछ काबू रख सकेगा? यानी क्या उससे उन करोड़ों लोगों को स्वराज्य मिल सकेगा, जिनके पेट भूखे हैं और आत्मा अतृप्त है?

तब तुम देखोगे कि तुम्हारा संदेह मिट रहा है और अहम् समाप्त होता जा रहा है।

© NCERT not to be republished